जुमा का ख़ुत्बा

दिनांक: 4 मुहर्रमुल हराम 1448 हिजरी | मुताबिक़: 19 जून 2026 ईस्वी

وَقَفَاتٌ مَعَ بِدَايَةِ الْعَامِ الْهِجْرِيِّ

नए हिजरी वर्ष की शुरुआत पर कुछ महत्वपूर्ण नसीहतें

सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सच्चा बादशाह है, बेहद पाक है और सलामती देने वाला है। वही रातों और दिनों को चलाने वाला है और महीनों और सालों को बदलने वाला है। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझेदार नहीं, जिसने मुहर्रम के महीने को साल के महीनों की शुरुआत बनाया। और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी हज़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं, जो तमाम सृष्टि के सरदार, चौदहवीं रात के मुकम्मल चाँद और नबूवत की आख़िरी मुहर (अंतिम नबी) हैं। अल्लाह तआला उन पर, उनके सम्मानित परिवार पर, उनके सहाबा पर और उनका बेहतरीन तरीक़े से अनुसरण करने वालों पर तब तक रहमतें, सलामती और बरकतें नाज़िल फरमाए जब तक उजाले और अंधेरे का आना-जाना जारी रहे।

हम्द व सलात के बाद:

ऐ अल्लाह के बंदो! मैं आपको और ख़ुद अपने आप को अल्लाह के तक़्वा और परहेज़गारी की वसीयत करता हूँ; क्योंकि तक़्वा ही सबसे बरकत वाली पूंजी, सबसे क़ीमती तोहफ़ा और सबसे ऊँचा मक़सद है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشَ اللَّهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ } [النور: 52]

" जो भी अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे, और अल्लाह से डरे और उसका तक़्वा अख़्तियार करे, तो वही लोग कामयाब होने वाले हैं।" (सूरह अन्-नूर: 52)

और याद रखो कि सबसे बेहतरीन बात अल्लाह की किताब है, और सबसे बेहतरीन तरीक़ा हज़रत मुहम्मद ﷺ का तरीक़ा है, और सबसे बुरे काम (दीन में) नई निकाली गई चीज़ें हैं, और हर नई निकाली गई चीज़ बिदअत है, और हर बिदअत गुमराही है।

ऐ मुसलमान भाइयो!

मुस्लिम उम्माह इन दिनों एक नए हिजरी साल का स्वागत कर रही है, जबकि बीते हुए साल का सूरज अपने तमाम दुखों और सुखों के साथ विदा हो चुका है। वह साल इस हाल में रवाना हुआ कि वह हमारे आमाल का सच्चा गवाह है और हमारे पूरे साल का रिकॉर्ड अपने साथ ले गया है। रातों और दिनों का बदलना और महीनों और सालों का ख़त्म होना कितना तेज़ है!! लेकिन याद रखिए, कामयाब और ख़ुशनसीब इंसान वही है जो वक़्त के इन बदलते हुए हालात से सबक़ और सीख हासिल करे, और गुज़रते हुए लम्हों से नसीहत पाए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ} [القمر: 4].

"और यक़ीनन उनके पास ऐसी ख़बरें आ चुकी हैं जिनमें (बुराइयों से) रोकने का पूरा सामान है।" (सूरह अल्-क़मरः 4)

ईमान वाले भाइयो!

आज से तक़रीबन चौदह सौ साल पहले, नबियों के सरदार और क़ायनात की सबसे पाक हस्ती, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ की हिजरत (मक्का से मदीना प्रवास) की महान घटना पेश आई। इस घटना ने दुनिया को अपनी रौशनी से रोशन किया और इसके पीछे महानता की अनगिनत निशानियां साफ़ हुईं। यही वजह है कि यह हिजरत मुस्लिम उम्मत के लिए एक अनमोल ख़ज़ाना, ज़िंदगी गुज़ारने का बेहतरीन तरीक़ा और इतिहास का वह चश्मा बन गई जो मुसलमानों को इज़्ज़त और वक़ार का रास्ता दिखाती है और आने वाली पीढ़ियों में सही फ़ैसले करने का हौसला पैदा करती है। आज हम उसी मुबारक हिजरत की यादें ताज़ा कर रहे हैं और इसके दौरान सामने

आने वाली क़ुर्बानी, दानशीलता और बलिदान के अहम पहलुओं का ज़िक्र कर रहे हैं, ताकि हम सब्र, आपसी सहयोग और वफ़ादारी का असली मतलब समझ सकें। हमारे प्यारे नबी ﷺ ने तेरह साल तक मक्का में अपनी क़ौम को बड़ी हिकमत और बहादुरी से दीन की दावत दी और डराने व ख़ुशख़बरी सुनाने के अलग-अलग तरीक़ों से अपना पैग़ाम पहुँचाया। आप ﷺ उनकी बैठकों और महफ़िलों में ख़ुद चल कर जाते थे, और इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं करते थे कि उन्हें इस राह में कितनी तकलीफ़ों और मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा है। दुश्मनों ने आपको गुमराह करने, आपका मज़ाक़ उड़ाने और दुःख पहुँचाने की हर मुमकिन कोशिश की। बात यहाँ तक पहुँच गई कि उन्होंने आप ﷺ को क़त्ल करने की योजना बनाया और हथियार लेकर आपके घर का घेराव कर लिया। मगर अल्लाह तआला ने अपने प्यारे रसूल ﷺ को उनके बीच से सुरक्षित निकाल लिया और उनकी साज़िश उन्हीं पर उलट दिया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ} [الأنفال: 30].

"(ऐ नबी उस वक़्त को याद करो) जब काफ़िर आपके ख़िलाफ़ साज़िश कर रहे थे ताकि आपको क़ैद कर दें, या आपको क़त्ल कर दें, या आपको (वतन से) निकाल दें, वह अपनी चालें चल रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीर फ़रमा रहा था, और अल्लाह सबसे बेहतरीन तदबीर फ़रमाने वाला है।" (सूरह अल्-अंफाल:30)

जब ज़ुल्म व सितम हद से बढ़ गया और मुसलमानों के लिए तकलीफ़ें बर्दाश्त से बाहर हो गईं, तो अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी ﷺ को मदीना मुनव्वरा हिजरत करने की इजाज़त दे दी। इसका मक़सद यह था कि आप ﷺ वहाँ मुसलमानों के बीच अमन और शांति के साथ रहें, मुशरिकों की साज़िशों से महफ़ूज़ हो जाएं, और अल्लाह के पसंदीदा दीन को पूरी दुनिया में फैलाएं। चुनांचे आपकी यह हिजरत

उम्मीद की एक नई किरण, जीत की शुरुआत, और एक लंबे ज़माने के बाद मुहाजिर सहाबा की विजेता और कामयाब होकर मक्का वापस लौटने का रास्ता बनी। अल्लाह तआला ने कहा:

{إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَى مَعَادٍ} [القصص: 85].

"ऐ नबी जिस (अल्लाह) ने आप पर क़ुरआन (के अहकाम) को फ़र्ज़ किया है, वह आपको दोबारा उसी जगह (मक्का) लौटाने वाला है।" (सूरह अल्-क़ससः85)

इस तरह अल्लाह तआला ने आप ﷺ की हिजरत की बरकत से इस्लाम को इज़्ज़त दी, और मुसलमानों की तकलीफ़ों और तंगियों का दौर ख़त्म हो गया। यह हिजरत हक़ की रौशनी और शिर्क के अंधेरों के बीच एक बड़ा और फ़ैसलाकुन मोड़ बनी, और इसी वाक़िए के बाद इस्लाम को ताक़त, हुकूमत और सत्ता हासिल हुआ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

{وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا} [الإسراء: 81].

"आप कह दीजिए कि हक़ आ गया और बातिल मिट गया, यक़ीनन बातिल मिटने ही वाला था।" (सूरह अल्-इसराः81)

ऐ तौहीद के परवानो!

हिजरत-ए-नबवी के वाक़िए, उसमें मौजूद शरीअत की नसीहतों और मोजिज़ात (चमत्कारों) पर ग़ौर करने वाला हर इंसान यह बात साफ़ तौर पर जान लेता है कि दुनिया में इज़्ज़त और जीत सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की तौहीद, पक्के ईमान, अल्लाह की तरफ़ लौटने और उसके सच्चे रसूल ﷺ के बताए हुए रास्ते पर चलने से ही मिल सकती है, हमारे रब ने अपनी किताब में फ़रमाया है:

{فَفِرُّوا إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ مُبِينٌ} [الذاريات: 50].

" तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ कर आओ, मैं तुम्हारे लिए उसकी तरफ़ से साफ़ तौर पर डराने वाला हूँ।" (सूरह अज़्-ज़ारियातः 50)

चुनांचे हिजरत की दो क़िस्में हैं:

पहली क़िस्म: जिस्मानी हिजरत; जो कि शिर्क की धरती से इस्लाम की धरती की तरफ़ की जाती है, और यह उस वक़्त होती है जब इंसान अपने मालिक और सब कुछ जानने वाले रब की इबादत करने से लाचार हो जाए, और इस्लाम के तौर-तरीक़ों जैसे कि नमाज़, ज़कात और रोज़ा का क़ायम करना नामुमकिन हो जाए। चुनांचे उस वक़्त मोमिन अपने दीन को बचाने के लिए और अपने ईमान व यक़ीन की हिफ़ाज़त की ख़ातिर हिजरत करने पर मजबूर हो जाता है; अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا} [النساء: 100].

"और जो कोई अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ हिजरत करते हुए निकले, फिर (रास्ते ही में) उसे मौत आ जाए, तो अल्लाह के यहाँ उसका अज्र साबित हो गया, और अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, बहुत रहम फ़रमाने वाला है।" (सूरह अन्-निसा: 100)

दूसरी क़िस्म: क़ल्बी (दिल की) हिजरत; और यह अल्लाह तआला की तरफ़ उसकी तौहीद को मानकर, उसकी ख़ुशी की तलाश करके, उसकी नाफ़र्मानियों और नाराज़गी के कामों से दूर रहकर, और उसके क़ानूनों और कर्तव्यों की पाबंदी करके होती है। चुनांचे नबी ﷺ ने फ़रमाया:

«الْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهَى اللهُ عَنْهُ»

"मुहाजिर (हक़ीक़त में) वह है जो उन चीज़ों को छोड़ दे जिनसे अल्लाह ने मना फ़रमाया है।" [इस हदीस को इमाम बुख़ारी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है]।

और दिल की यह हिजरत ईमान के सही होने और उसकी असल बुनियाद की सलामती के लिए एक बुनियादी शर्त है, और यह मुसलमान पर उसकी पूरी ज़िंदगी में फ़र्ज़ है, जिसे वह अपनी मौत के वक़्त तक कभी नहीं छोड़ सकता। इसी वजह से सहाबा के दिलों में हिजरत का महत्व बहुत बड़ा था, और उन्होंने लोगों के सामने इसकी फ़ज़ीलत को ज़ाहिर करने और इसके हुक्म को दुनिया में वाज़िह करने में भरपूर कोशिश की। चुनांचे उन्होंने इसी हिजरत को हर नए साल की शुरुआत के लिए कैलेंडर की शरूआत क़रार दिया, और महीनों और दिनों के हिसाब के लिए इसी को प्रामाणिक वक़्त मुक़र्रर किया; ताकि उम्मत की तारीख और उसकी संस्कृति की महानता पर फ़ख्र किया जा सके, उसकी कोशिश और उसके पाक मक़सद को याद किया जा सके, और उसकी आज़ादी को मज़बूत करते हुए दूसरों की ग़ुलामी का ख़ात्मा किया जा सके।

इसलिए ऐ अल्लाह के बंदो! इस नए साल के शुरू में सच्चे दिल से तौबा कीजिए, अपने रब की तरफ़ लौटते हुए अच्छे कामों की पूंजी जमा कीजिए, और अच्छे अंजाम, पक्की ख़ुशहाली और बहुत सी नेमतों की ख़ुशख़बरी हासिल कर लीजिए। उस अल्लाह की क़सम जिसने हमारे नबी मुहम्मद ﷺ को सच्चा दीन देकर भेजा! किसी मुसलमान की हालत तब तक ठीक नहीं हो सकती जब तक वह दीन पर अमल न करने लगे, और उसे इज़्ज़त और मर्तबा तब तक नहीं मिल सकता जब तक वह अल्लाह की तरफ़ लौट न आए और नबियों और रसूलों के बताए हुए तरीक़े पर न चले।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

«إِنَّا قَوْمٌ أَعَزَّنَا اللَّهُ بِالإِسْلَامِ، فَمَهْمَا نَطْلُبِ العِزَّةَ بِغَيْرِ مَا أَعَزَّنَا اللَّهُ بِهِ أَذَلَّنَا اللَّهُ»

"बेशक हम एक ऐसी क़ौम हैं जिन्हें अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिए इज़्ज़त बख़्शी, जब कभी भी हम उस चीज़ के अलावा किसी और चीज़ में इज़्ज़त तलाश करेंगे जिसके ज़रिए अल्लाह ने हमें इज़्ज़त दी थी, तो अल्लाह हमें ज़लील कर देगा।" [इसे इमाम हाकिम ने अपनी मुस्तदरक में रिवायत किया है और अल्लामा अल्बानी ने सही क़रार दिया है]।

ऐ अल्लाह! हमारे आख़िरी कामों को हमारे सबसे अच्छे काम बना दे, हमारी आख़िरी उम्र को सबसे बेहतरीन उम्र बना, और हमारा सबसे अच्छा दिन उस दिन को बना जिस दिन हम तुझ से मिलेंगे। बेशक तू ही वह महिमा है जिससे मांगा जाए और जिससे सबसे ज़्यादा दया की उम्मीद रखी जाए।

अल्लाह तआला मेरे और आपके लिए क़ुरआन-ए-मजीद में बरकत पैदा फ़रमाए, और मुझे और आपको इन आयात और हिकमत की बातों से फ़ायदा पहुँचाए। मैं अपनी बात कहता हूँ और अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए हर गुनाह की माफ़ी मांगता हूँ, और उसी से तौबा करता हूँ, बेशक वही माफ़ करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

दूसरा ख़ुत्बा

सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने हमारे हालात को ठीक किया और हमारा अंजाम अच्छा किया। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा इबादत के लायक़ नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझेदार नहीं; और उसका हर हुक्म ग़ालिब होकर रहता है। और मैं गवाही देता हूँ कि हमारे नबी और हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं, जिन्हें सबसे ऊँचे मर्तबे और ख़ूबियों के लिए चुना गया है। अल्लाह तआला उन पर, उनके परिवार पर और उनके उन सहाबा पर रहमतें और ज़्यादा से ज़्यादा सलामती नाज़िल फ़रमाए जिन्होंने सबसे ऊँचे दर्जे पाए।

हम्द व सलात के बाद:

अल्लाह के बंदो! अल्लाह का डर अपने दिलों में पैदा करो, क्योंकि यही तक़्वा (परहेज़गारी) तुम्हारी कामयाबी और मदद का ज़रिया है, इसी से तुम्हारे काम सँवरते हैं, यही तुम्हारी इज़्ज़त का ताज है और यही तुम्हारी असल ताक़त की निशानी है।

ऐ ईमान वाले भाइयो!

साल के शुरू में हम जिन बड़ी घटनाओं को याद करते हैं और उनसे सबक़ हासिल करते हैं; वह यह है कि अल्लाह तआला किस तरह अपने नेक बंदों की मदद फ़रमाता है और अपने दुश्मनों को सज़ा देता है। यह एक ऐसा सच्चा और हमेशा ज़िंदा रहने वाला वाक़िया है जो वक़्त गुज़रने और हुकूमतें बदलने से भी पुराना नहीं होता। यह वह वक़्त था जब अल्लाह तआला ने अपने महान रसूल हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को कामयाबी दी, और ज़ालिम फ़िरऔन को उसकी सेना समेत समंदर में डुबो दिया। अल्लाह ने बनी इसराईल के लिए समंदर के बीचों-बीच रास्ता बनाकर उन्हें सही-सलामत निकाल लिया। वह लोग जो कल तक ग़ुलाम और कमज़ोर बनाकर रखे गए थे, उन्हें इस महान जीत के बाद अमन शांति और ज़मीन पर हुकूमत मिल गई।

इससे हमें यह सबक़ मिलता है कि ज़ुल्म, ज़्यादती और तकलीफ़ें चाहे जितनी ज़्यादा हों और जितने लंबे वक़्त तक रहें, आख़िरकार अल्लाह की मदद उसके प्यारे बंदों को ही मिलती है और अंजाम अच्छा होता है। इसमें हर उस इंसान के लिए बड़ी सीख है जो ज़ालिमों के रास्ते पर चलता है, कि अल्लाह का अज़ाब उसे भी एक दिन ज़रूर पकड़ेगा, चाहे कुछ देर ही क्यों न हो जाए। अतः हिजरत का वाक़िया और आशूरा का दिन, ये दोनों ही हमेशा रहने वाली जीत के दिन हैं। याद रखिए! इस वाक़िए से ईमान वालों की आँखें ठंडी होनी चाहिए, और ज़ालिमों व झूठ का साथ देने वालों को वक़्त ख़त्म होने से पहले अपनी बुराइयों से बाज़ आ जाना चाहिए। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرَى لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ } [ق: 37].

"बेशक इसमें उस आदमी के लिए नसीहत है जिसके पास (जागता हुआ) दिल हो या वह पूरी तवज्जो से कान लगा कर बात सुने।"

ऐ ईमान वाले भाइयो!

अल्लाह के महीने 'मुहर्रम' के पसंदीदा कामों में से: एक अहम काम यह है कि इसमें ज़्यादा से ज़्यादा रोज़ा रखना मुस्तहब (प्रिय) है। चुनांचे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

«أَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ رَمَضَانَ شَهْرُ اللهِ الْمُحَرَّمِ» [أخرجَهُ مُسْلِمٌ].

"रमज़ान के बाद सबसे अफ़ज़ल रोज़ा अल्लाह के महीने मुहर्रम का है।" [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है]।

और ख़ास तौर पर दसवीं तारीख़ (आशूरा) का रोज़ा, क्योंकि इस दिन का रोज़ा गुज़रे हुए पूरे एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा (माफ़ी का ज़रिया) बन जाता है। हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ से आशूरा के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया:

«أَحْتَسِبُ عَلَى اللهِ أَنْ يُكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِي قَبْلَه» [أخرجَهُ مُسْلِمٌ].

"मैं अल्लाह से उम्मीद रखता हूँ कि वह इसके बदले पिछले एक साल के गुनाहों को माफ़ कर देगा।" [इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है]।

और नबी करीम ﷺ ने अहल-ए-किताब (यहूदी और ईसाई) की मुख़ालिफ़त करने और ख़ैर व सवाब में बढ़ोत्तरी की ख़ातिर इससे एक दिन पहले भी रोज़ा रखने का इरादा फ़रमाया था; चुनांचे आप ﷺ ने फ़रमाया:

«لَئِنْ بَقِيتُ إِلَى قَابِلٍ لَأَصُومَنَّ التَّاسِعَ» [أخرجَهُ مُسْلِمٌ].

"अगर मैं अगले साल तक ज़िंदा रहा तो ज़रूर नौवीं तारीख़ का रोज़ा भी रखूँगा।"[इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है]।

इस लिए ऐ भाग्यशाली लोगो! अपने नबी ﷺ की दावत पर लब्बैक कहो, और अपने रब की प्रसन्नता चाहने के लिए इन दो दिनों (नौ और दस मुहर्रम) के रोज़े रखने में जल्दी करो। यह है तो छोटा सा अमल, लेकिन इस पर बेशुमार अज्र व सवाब मिलता

है। अक्लमंद तो वही है जो इन मुबारक मौकों को नेकियाँ कमाने के लिए ग़नीमत जाने, और अपने नए साल की शुरुआत नेक कामों, इबादत और ऊँचे दर्जों की कामयाबी हासिल करने से करे।

इसके साथ ही-अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए-यह बात जान लें कि अज्र के लिहाज़ से सबसे अफ़ज़ल आमाल में से; आदम की औलाद में सबसे अफ़ज़ल, ऊँचे मुक़ाम व मर्तबे वाली हस्ती, निशानियों, साफ़ दलीलों और चमकदार रौशन ख़ूबियों के मालिक नबी करीम ﷺ पर ज़्यादा से ज़्यादा दरूद व सलाम भेजना है। यक़ीनन आपके रब ने आपको इसका हुक्म दिया है, अतः उसने पवित्र क़ुरआन में कहा:

{إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَاأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا} [الأحزاب: 56].

"बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उन पर दरूद भेजो और ख़ूब सलाम भेजा करो।" (सूरह अल्-अहज़ाबः 56)

ऐ अल्लाह! उन पर और उनके सारी परिवार और सहाबा पर रहमत नाज़िल फ़रमा, ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को माफ़ कर दे, उनमें से ज़िंदों को भी और मुर्दों को भी। ऐ हमारे रब! हम से आज़माइश, महामारी, तकलीफ़ें और सख़्तियाँ दूर फ़रमा दे। और हम पर अपनी नेमतें हमेशा क़ायम रख, हम से अज़ाबों को दूर कर दे, और हमारे नफ़्सों को पाक साफ़ कर दे, तू ही सबसे बेहतर पाक करने वाला है। ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई अता फ़रमा और आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। ऐ अल्लाह! कुवैत और उसके रहने वालों को हर बुराई और नापसंदीदा चीज़ से महफ़ूज़ रख। और इस देश को और मुसलमानों के दूसरे सारे देखों को अमन व इत्मीनान वाला बना दे, और उनके क़दमों के नीचे ज़मीन को मज़बूती दे। ऐ अल्लाह! हमारे अमीर और उनके वली अहद को उन कामों की तौफ़ीक़ दे जिन्हें तू पसंद करता है और जिनसे तू राज़ी होता है, और उन्हें नेकी और तक़्वा के कामों की तरफ़ माइल कर दे। और हमारी आख़िरी पुकार यही है कि सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का पालने वाला है।

ख़ुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटी